بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَصَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ الْعَصْرِ (عج) اَدْرِكْنَا وَلَا تُهْلِكْنَا

قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى فِي كِتَابِهِ

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعاً وَلَا تَفَرَّقُوْا

अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी किताब में इरशाद फ़रमायाः

''और अल्लाह की रस्सी को तुम सब मिल कर मज़बूती से थाम लो और तफ़रेक़ा न करो।''

क़ुर्आने मजीद, सूरए आले इमरान (३): आयत १०३

क़ुर्आने करीम और अमीरुल मोमिनीन (अलैहिस्सलाम) तीसरी फ़स्ल (२०२४)

मुक़द्दमा

अल्लाह के नाम से इब्तिदा करते हैं जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है और उसकी आख़री हुज्जत और हमारे ज़माने के इमाम हज़रत इमाम हुज्जत इब्निल हसन अल-अस्करी (अलैहिमस्सलाम) से फ़ैज़ व लुत्फ तलब करते हैं।

हज़रत रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) अपनी मश्हूर और मारूफ़ हदीस जैसे हदीसे सक़लैन (दो गिराँ क़द्र चीज़ों वाली हदीस) में, जिसे तमाम मुसलमानों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर क़ुबूल किया है, ख़्वाह वह किसी भी फ़िर्क़े से ताल्लुक़ रखते हों, फ़रमाते हैः

اِنِّیۡ تَارِکٌ فِیۡکُمُ الثَّقَلَیۡنِ کِتَابَ اللّٰہِ وَعِتۡرَتِیۡ اَھۡلَ بَیۡتِیۡ مَا اِنۡ تَمَسَّکۡتُمۡ بِھِمَا لَنۡ تَضِلُّوۡا بَعۡدِیۡ اَبَدًا وَلَنۡ یَّفۡتَرِقَا حَتّٰی یَرِدَا عَلَیَّ الۡحَوۡضَ

“मैं तुम्हारे दर्मियान दो गिराँ क़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, अल्लाह की किताब और मेरी इत्रत मेरे अहलेबैत (अलैहिमुस्सलाम)। अगर तुम इन दोनों से मुतमस्सिक रहोगे तो मेरे बाद कभी भी गुमराह नहीं होगे क्योंकि यह दोनों कभी भी एक दूसरे से जुदा नहीं होंगी यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े (कौसर) पर वारिद होंगी।”

(अल-मुर्तर्शिद फ़ी इमामते अली इब्ने अबी तालिब (अलैहिमस्सलाम), मुहम्मद इब्ने जरीर तबरी, सफ़्हा ५५९, हदीस २३७)

हमारी कोशिश और वाहिद मक़्सद यह है कि तालीमाते सक़लैन यानी क़ुर्आने मजीद और पैग़म्बरे अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) और उन की पाक व पाकीज़ा आल (अलैहिमुस्सलाम) की रवायात से मुतमस्सिक रहना और उनकी तब्लीग़ करना ताकि उनकी सहीह तालीमात लोगों तक पहुँचे।

इस किताब के मक़ासिद हैं:

१. क़ुर्आने मजीद की उन आयतों को मुतआरिफ़ कराना जो अमीरुल मोमिनीन इमाम अली इब्ने अबी तालिब (अलैहिमस्सलाम) की शान में नाज़िल हुई हैं।

२. शीआ और अहले तसन्नुन मनाबेअ से मुख़्तसर तफ़्सीर के ज़रीए इन आयतों की ताईद करना।

३. इस हक़ीक़त को साबित करना कि अहलेबैत (अलैहिमुस्सलाम) की फ़ज़ीलत में, बिल-ख़ुसूस इमाम अली इब्ने अबी तालिब (अलैहिमस्सलाम) की शान में उन आयतों के नाज़िल होने के बारे में शीआ और अहले तसन्नुन दोनों अपने नुक़्ते नज़र में मुत्तफ़िक़ व मुत्तहिद हैं।

पहली आयतः जिसने अल्लाह की रज़ा के लिए अपने नफ़्स को बेच दिया

आयत और तर्जुमा

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡرِیۡ نَفۡسَهُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾

''और लोगों में वह भी हैं जो अपने नफ़्स को मर्ज़ीए परवरदिगार के लिए बेच डालते हैं और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है।''

(सूरह बक़रा (२), आयत २०७)

शिया नज़रिया

- आयत ''और लोगों में वह भी हैं जो अपने नफ़्स को मर्ज़ीए परवरदिगार के लिए बेच डालते हैं'' से मुराद अमीरुल मोमिनीन अली इब्न अबी तालिब अलैहिमस्सलाम हैं। 'ख़ुद को बेचने' का मतलब है 'ख़ुद को क़ुर्बान करना'।

(तफ़्सीरुल क़ुम्मी, जिल्द १, सफ़्हा ७१)

- अबुल यक़्ज़ान बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने क़ुरैश का आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम को मक्र और फ़रेब देने और अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम का आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के बिस्तर पर रात गुज़ारने के बारे में बयान फ़रमाया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम फ़रमाते हैंः ''अल्लाह तआला ने जिब्रील और मीकाईल अलैहिमस्सलाम पर वही की कि उसने दोनों के दरमियान भाईचारे को

क़ाएम कर दिया है और एक की उम्र को दूसरे से तूलानी कर दिया है, और पूछा कि उनमें से कौन अपने भाई को तर्जीह देगा?

तो उन दोनों ने मौत को नापसंद किया तो अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ वही फ़रमाई कि

''काश तुम मेरे प्यारे हबीब अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमस्सलाम की तरह होते, मैंने उन्हें अपने नबी का भाई बनाया और आपने उन्हें (रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) अपनी जान पर तरजीह दी, फिर ठहर गए। या उसने कहाः उनके बिस्तर पर सो गए, उन सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के लिए अपने आप को कुर्बान कर दिया। तुम दोनों ज़मीन पर जाओ और उन्हें उनके दुश्मन से बचाओ।''

चुनांचे जिब्रील नाज़िल हुए और उनके सरहाने बैठ गए, और मीकाईल उनके क़दमों के पास, और जिब्रील अलैहिस्सलाम कहते रहेः ''आप कितने अज़ीम हैं, ऐ अबी तालिब के बेटे, अल्लाह की कसम, अल्लाह फ़रिश्तों के सामने आप पर फ़ख़्र और मुबाहात कर रहा है!''

और अल्लाह अमीरुल मोमिनीन अली इब्न अबी तालिब अलैहिमासलाम के बारे में नाज़िल करता हैः ''और लोगों में वह भी हैं जो अपने नफ़्स को मर्ज़ीए परवरदिगार के लिए बेच डालते हैं और अल्लाह अपने बंदों पर बड़ा मेहरबान है।''

(अमाली, शेख़े तूसी रहमतुल्लाहि अलैह, सफ़्हा ४६३, हदीस १०३१)

अहले तसन्नुन नज़रिया

- 'अम्र इब्ने मैमून से, उसने कहाः ''... और अमीरुल मोमिनीन, इमाम अली अलैहिस्सलाम ने अपने आप को (ख़ुदा की ख़ातिर) बेच दिया, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम की चादर ओढ़ी और फिर उनकी जगह पर सो गए।''

(मुस्नदे अहमद इब्ने हम्बल, जिल्द १, सफ़्हा ३३०-३३१, हदीस ३०५२)

- इब्ने अब्बास से, उन्होंने कहाः ''अमीरुल मोमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम ने अपने आप को बेच दिया (अल्लाह की रज़ा के लिए), रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम का लिबास पहना, और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम की जगह पर सो गए।''

(अल–मुस्तद्रक अलस्सहीहैन, हाकिम नीशापूरी, जिल्द ३, सफ़ह ४, हदीस ४३२२)

(मुअल्लिफ़ लिखते हैं, इस हदीस में रावियों का एक मोअतबर सिलसिला है लेकिन बुखारी व मुस्लिम ने इसे शामिल नहीं किया। इसे अबू दाऊद त्यालीसी और दूसरे ने अबू अवानह से भी इज़ाफ़ी अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत किया है।)

दूसरी आयतः क्या मोमिनीन भी फासिकों की तरह हो सकते हैं?

आयत और तर्जुमा

اَفَمَنۡ كَانَ مُؤۡمِنًا كَمَنۡ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا يَسۡتَوٗنَ

क्या वह शख्स जो साहिबे ईमान है उसके मिस्ल हो जाएगा जो फ़ासिक़ है? हरगिज़ नहीं दोनों बराबर नहीं हो सकते।

(सूरह सज्दा (३२), आयत १८)

शीआ नज़रिया

अबूज़रे गिफ़ारी रहमतुल्लाहि अलैह बयान करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम ने अहले शूरा से अपनी फ़ज़ीलत के बारे में गुफ्तगू करते हुए उनसे पूछाः

''क्या तुम में से कोई ऐसा है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने यह नाज़िल किया हैः क्या वह शख़्स जो साहिबे ईमान है उसके मिस्ल हो जाएगा जो फासिक है? हरगिज़ नहीं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह तआला ने मुमिनों में से मेरे सिवा किसी और के बारे में बयान फ़रमाया है?''

उन्होंने जवाब दियाः ''अल्लाह की कसम नहीं।''

(अल-अमाली शेख तूसी रहमतुल्लाहि अलैह, सफ़्हा ५५०, हदीस ११६८)

अहले तसन्नुन नज़रिया

इब्ने अब्बास नक़्ल करते हैंः

वलीद इब्ने उक़्बा इब्न अबी मुईत ने अमीरुल मोमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम से कहाः ''मैं तीर अंदाज़ी में आप से ज़्यादा तेज़, तक़रीर में आप से ज़्यादा फ़सीह हूँ, और फ़ौज को मुरत्तब करने में आप से बेहतर हूँ।"

जिस पर अमीरुल मोमिनीन, इमाम अली अलैहिस्सलाम ने जवाब दियाः ''ख़ामोश रहो, क्योंकि तुम सिर्फ़ एक बदकार शख़्स हो।''

उस वक्त यह आयत नाज़िल हुईः ''क्या वह शख़्स जो साहिबे ईमान है उसके मिस्ल होगा जो फासिक है? हरगिज़ नहीं, दोनों बराबर नहीं हो सकते।'' अमीरुल मोमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम को मुमिन और वलीद बिन अकबा इब्न अबी मुईत को फासिक क़रार दिया।

(अल-दुर्रुल मन्सूर फ़ी तफ़्सीरिल मासूर, सुयूती, जिल्द ६, सफ़्हा ५५३)

तीसरी आयतः विलायत हिदायत है

आयत और तर्जुमा

وَاِنِّیۡ لَغَفَّارٌ لِّمَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهۡتَدٰی

और मैं बहुत ज्यादा बख्शने वाला हूँ उस शख्स के लिए जो तौबा कर ले और ईमान ले आए और नेक अमल करे और फिर हिदायत की राह पर साबित कदम रहे।

(सूरह ताहा (२०), आयत ८२)

शीआ नज़रिया

अबू जफर इमाम मुहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह ताला के इस क़ौल ''और मैं बहुत ज्यादा बख्शने वाला हूँ उस शख्स के लिए जो तौबा कर ले और ईमान ले आए और नेक अमल करे और फिर हिदायत की राह पर साबित कदम रहे'' के बारे में इर्शाद फ़रमायाः

''अमीरुल मोमिनीन अलैहिस्सलाम की वलायत की तरफ़।''

(तावीलुल आयातिज़ ज़ाहिरा फ़ी फ़ज़ाएलिल इत्रतित ताहिरा, मुल्ला अली अस्तराबादी रहमतुल्लाहि अलैह, सफ़्हा ३१०)

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वा आलिही व सल्लम फ़रमाते हैंः

''अल्लाह की कसम ऐ अली! आप को इस लिए पैदा किया गया है कि आप के ज़रीए से दीन की निशानियाँ पहचानी जाए और आप के ज़रीए हिदायत के रास्ते दुरुस्त हो जाएं। बेशक जो आप से मुनहरिफ़ हुआ वो हक़ीक़त में मुनहरिफ़ है, और वो अल्लाह की तरफ़ हिदायत नहीं पा सकता जब तक कि वह आप की (वलायत की) तरफ़ हिदायत न पा ले। और यह मेरे रब का फ़रमान हैः और मैं बहुत ज्यादा बख्शने वाला हूँ उस शख्स

के लिए जो तौबा कर ले और ईमान ले आए और नेक अमल करे और फिर हिदायत की राह पर साबित कदम रहे यानी आप अलैहिस्सलाम की वलायत की तरफ़।''

अहले तसन्नुन नज़रिया

साबित अल-बनानी से (ख़ुदा के) इस क़ौल के बारे में: ''और मैं बहुत ज्यादा बख्शने वाला हूँ उस शख्स के लिए जो तौबा कर ले और ईमान ले आए और नेक अमल करे और फिर हिदायत की राह पर साबित कदम रहे।'' वह कहता है कि हिदायत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम के अहले बैत अलैहिमुस्सलाम की विलायत की तरफ़।

(तफ़्सीरे तबरी, जिल्द १६, सफ़्हा १२९)

चौथी आयतः अहले ज़िक्र

आयत और तर्जुमा

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ

और हमने आप से पहले भी मर्दों को रसूल बनाकर भेजा है और उन की तरफ़ भी वही करते रहे हैं तो उनसे कह दीजिए कि अगर तुम नहीं जानते हो तो जानने वालों से पूछो।

(सूरह नह्ल (१६), आयत ४३)

शीआ नज़रिया

सुद्दी नक़ल करते हैं कि वह उमर बिन ख़त्ताब के साथ थे तब काब बिन अशरफ, मालिक बिन सैफ़ी और हय्य बिन अख़्तब उनके पास आये। उन्होंने कहाः ''आपकी किताब में एक जन्नत का ज़िक्र है जिसकी वुसअत आसमानों और ज़मीन के बराबर है। अगर एक जन्नत की वुसअत सात आसमानों और सात ज़मीनों के बराबर है तो क़यामत के दिन सारी जन्नतें कहाँ होंगी?''

उमर ने कहा, मुझे नहीं मालूम।

जब वह इस बारे में गुफ्तगू कर रहे थे तब अमीरुल मुमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम तशरीफ लाए और पूछा कि क्या बात हो रही है? यहूदी शख्स ने सवाल दोहराया और अमीरुल मुमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम ने उससे पूछाः मुझे बताओ, रात के आने पर दिन कहाँ जाता है और जब दिन आता है तो रात कहाँ जाती है?

उसने जवाब दिया कि यह अल्लाह के इल्म में है।

अमीरुल मुमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम ने फरमायाः उसी तरह जन्नतें भी अल्लाह के इल्म में हैं।

अमीरुल मुमिनीन इमाम अली अलैहिस्सलाम फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वा आलिही व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको इस गुफ्तगू के बारे में बताया तब वही नाज़िल हुईः ''तो उनसे कह दीजिए कि अगर तुम नहीं जानते हो तो जानने वालों से पूछो।''

(मनाक़िबे आले अबी तालिब, इब्ने शहर आशोब रहमतुल्लाहि अलैह, जिल्द २, सफ़्हा ३५२)

इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह ताला की इस आयत के बारे में फ़रमाया है: ''अगर तुम नहीं जानते हो तो जानने वालों से पूछो''... रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वा आलिही व सल्लम ने फ़रमायाः

''मैं ज़िक्र हूँ जबकि अइम्मा अलैहिमुस्सलाम अहले ज़िक्र हैं।''

(अल-काफ़ी, जिल्द १, सफ़्हा २१०, हदीस १)

अहले तसन्नुन नज़रिया

जाबिर ज़ोअफी कहते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो अमीरुल मोमिनेन इमाम अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः हम अहले ज़िक्र हैं।

(तफसीरे क़ुर्तब्बी, जिल्द ११, सफ़्हा १८२; तफसीरे तबरी, जिल्द १८, सफ़्हा ४१४; तफसीरे सालबी, जिल्द ६, सफ़्हा २७०)

पांचवीं आयतः सादेक़ीन

आयत और तर्जुमा

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ

''ऐ साहेबे ईमान! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।''

(सूरह तौबा (९), आयत ११९)

शीआ नज़रिया

- इब्ने अब्बास से रवायत है कि 'ऐ साहेबे ईमान! अल्लाह से ड़रो और सच्चों के साथ हो जाओ।'' यानी अमीरुल मुमिनीन अली बिन अबी तालिब अलैहिमासलाम के साथ हो जाओ।

  (बिहारुल अन्वार, अल्लामा मजलिसी रहमतुल्लाहि अलैह, जिल्द ३५, सफ़्हा ४०८)

- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फरमायाः ''सच्चे लोग तीन हैंः हबीबे नज्जार, मोमिने आले यासीन जिन्होंने कहा, 'ऐ लोगों! रसूलों की पैरवी करो', हिज़्क़ील, मोमिने आले फ़िरऔन जिन्होंने कहा, 'क्या तुम उस शख़्स को क़त्ल करोगे जो कहता है मेरा परवरदिगार अल्लाह है', और तीसरे अमीरुल मुमिनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमासलाम हैं, और वह सब में बेहतरीन हैं।''

  (तफसीरे फ़ुरात इब्ने इब्राहीम कूफ़ी, सफ़्हा ३५४)

- इमाम मुहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः ''अमीरुल मुमिनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमासलाम ने कूफ़े में एक ख़ुत्बे में फ़रमायाः ... अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'सच्चों के साथ हो जाओ', मैं ही वह सच्चा हूं।''

  (मानील अख़्बार, शेख़ अल-सदूक़ रहमतुल्लाहि अलैह, सफ़्हा ५८, हदीस ९)

अहले तसन्नुन नज़रिया

''और सच्चों के साथ हो जाओ'' के हवाले से इब्ने मर्दवय्ह ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि : ''अमीरुल मुमिनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमासलाम के साथ हो जाओ।''

(फ़तह उल-क़दीर शौकानी, जिल्द १, सफ़्हा ६०५)

अबू ज़ाफ़र इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ''ऐ ईमानदारों! अल्लाह से ड़रो और सच्चों के साथ हो जाओ।'' के हवाले से फ़रमाते हैं किः ''अमीरुल मुमिनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिमासलाम के साथ हो जाओ।''

(तारीख़े दमिश्क़ इब्ने असाकिर, जिल्द ४२, सफ़्हा ३६१)

नादे अली सग़ीर

نَادِ عَلِيّاً مَظْهَرَ الْعَجَائِبِ
अली (अलैहिस्सलाम) को पुकारो जो अजाएब का मज़हर है
تَجِدْهُ عَوْناً لَكَ فِي النَّوَائِبِ
तुम उन्हें मुश्किलों में अपना मददगार पाओगे
كُلُّ غَمٍّ وَهَمٍّ سَيَنْجَلِي
हर हम व गम बहुत जल्द बरतरफ़ हो जाएगा
بِوَلَايَتِكَ يَا عَلِيُّ يَا عَلِيُّ يَا عَلِي
आप की विलायत के तुफ़ैल में या अली (अलैहिस्सलाम) या अली (अलैहिस्सलाम) या अली (अलैहिस्सलाम)
(बिहारुल अन्वार, जिल्द २०, सफ़्हा ७३)